195
856
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1198
10/21
आह्वानांक Call No. _____
अवाप्ति सं० Acc. No. 856

2011

* राष्ट्रीय नई कजली *

सावन का सेनापति

बंगाली अधर सितारेहिंदके शिष्य शायर रामदासके शिष्य



गोपाल लाल गुप्त.

प्रकाशक—मेत्रालाल एण्ड को०,

कचौड़ी गली, बनारस सिटी।

मू० -)

891.431
G959A

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 856
Date 23.12.71
GOVT. OF INDIA

॥ ॐ ॥

राष्ट्रीय नई कजरी ।

सावन का सेनापति ।

कजरी सुमिरनी ।

धन धन गजानन्द गणनायक शंकर सुवन कहात ह ॥ तातस कोटि देवतन स आग पुजवात हैं । लाल बदन भुज चार हार गरमें लहराते हैं ॥ गुण आगर सागर बिद्याके शेष बताते हैं । गोपाल नित दरसन कारन मनमें अकुलाते हैं ॥

कजरी ॥ २ ॥

झण्डा तिनरंगा भारत मे ऊचा रह हमारा ना ॥ इसीके बलपर होगा एक दिन बिजय तुम्हारा ना । गांधी मोतीलाल जवाहिर का यह प्यारा ना ॥ रँण में बीरन के मन जोस बढ़ावन हारा ना ।

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR 1931

गोपाल कहते दशनन का नहिं चलता चारा ना ॥
कजरी शारदा विलकी ॥ ३ ॥

बार बार शारदा पै मैं बलिहारी मोरे बलमू ।
पास कराया बिल भारत हितकारी मोरे बलमू ॥टेक॥
बालेपनमें करके शादी होते थे सब लोग निहाल ।
बल बिद्या धन धर्म गवा के दिन पर दिन होते कंगाल ॥ बूढ़ बैल के संग में केतनी व्याही जातीं अबोध बाल । बेच बेचके लड़िकिन के कंतने बन जाते कोठी बाल ॥ अपने नित मौज उड़ावें । लड़किन पर छुरी चलावें । ना समझाये से समझैं मुरख अनारी मोरे बलमू ॥ इसी वजह से भारत की केतनी नारी कमसीन सुनो । गैरों के संग निकलके भागैं होकर के बेदीन सुनो ॥ केतनी ठोकर खाती फिरतीं हो कौड़ी के तीन सुनो । पाप करैं छिप छिपके घरमें घरकी रहैंकुलीन सुनो ॥ बिधवा बनके रहती हैं, दुखपरदुख नित सहती हैं । कलप२

नित रोती हैं दुखियारी मोरे बलमू ॥ समझाने से तनिक नमानै आखिर में फिर होय निरास । बना शारदा बिलका फारन किया पस कौंसलम खास॥ औनइस सै औनतिस पहिलो अक्टूबरको करवाया पास । मुसलमान हिन्दु दोनों मिल कियाहैं भारत का दुख नास ॥ छःमास तलक से भाई । मोहलत था दिया सुनाई । कुल जातिन पर एक रूल सर-कारा मार लबमू ॥ लड़का चादह बरस का हाव लड़का रहे अठारह साल । इससे कममें करै जो शादी हो जेहल उसको ततकाल ॥ कुछ लोभी पंडितोंके दिलमें इनबातों का हुआ मलाल । मजा मारते जो घर बैठे हम लोगों पर बिछाके जाल ॥ उलटा सीधा समझाते । मनमानी पाठ पढ़ाते । इतने दिनकी छीन गई जमीदारी मोरे बलमू ॥ इन्हें धर्मका ख्याल नहीं है झूठी ढोंग दिखाते हैं। साल पछत्तर के बुढ़ेका यह शादी करवाते हैं ॥ अधरम

नित करते हैं अपने धर्म२ चिल्लाते हैं। वर कन्या को भार में झोंकै अपने टका पुजाते है ॥ मदिरा औ मांस उड़ाते । रंडिन के जूठा खाते । रहे पूज्य पहिले अब सुनते गारी मोरे बलमू ॥ एक अपरेल तीस सन् से भारत में हुआ हुकुम जारी । उछल कूद हर तरह मचाया आखिर में हिम्मत हारी ॥ नाम धर्मका ले ले करके करते हैं नित ठगहारी । रामदास कहैं इन लोगन से बचके रहना नरनारी ॥ भारतको गारत कीन्हा, नहिं जराभी करवट लीन्हा । गोपाल कहते मौज करै मठधारी मोरे बलमू ॥

कजरी ॥ ४ ॥

चारो तरफ आज भारत में गांधी का जस छाया है ॥ सात भारत का आकर के खूब जगाया है । हो स्वतंत्र भारत मेरा ऐसा समझाया है ॥ कांप उठे दुश्मन जब चरखा चक्र चलाया है । गोपाल कहते अन्याई कानून मिटाया है ॥

कजरी ॥ ५ ॥

नइया पार करो भारत का आके कृष्न मुरारीना ॥
बीच भंवर में कलपत हैं बिलकुल नर नारी ना ।
बिन तीरे दुख पर दुख सहते निस दिन भारी ना॥
एक बेर भारत को फिर से लेव उबारी ना ।
गोपाल कहते यही अरज हौ अबकी पारी ना ॥

कजरी ॥ ६ ॥

भुलनी छोंकदार हम पहिनब अबकी पारी सावनमें।
रहे स्वदेशी अंगिया चादर सारी सावन में ॥
बिन एतना नहिं हम करबै तैयारी सावन में ॥
बहुत दिना से कहि कहिके हम हारी सावन में ।
गोपाल पिय मत भूले बात हमारी सावन में ।

कजरी ॥ ७ ॥

गोइयां कल सइयांसे चरखा अब हमहूँ मंगव इबै ना । सांझ सबेरे औ दुपहरिया रोज चलइबै ना ॥ धोती चादर सूत कातके हम बिनवइबै ना ।

पहिर के कजरी में अबकी नइहरवां जइबै ना ।
गोपाल मटरू कै कजरी सावन में गइबै ना ॥

कजरी ॥ ८ ॥

सँइयां करके गइलन धरसाने तैयरिया, कजरिया कइसे खेली ननदी ॥ बतिया गांधी कै मन भाई, सत्याग्रह में नाम लिखाई । सइयां कर के गइलन धरसाने तैयरिया, कजरिया कइसे खेली ननदी ॥ टेक ॥ भारत के बीरनके संग, सइयां गये मचावे जंग । तन पर खद्दर सोहै बढ़ियां रंग केसरिया ॥कजरिया०॥जहवां रहल निमक गोदाम। जंगी पल्टन खड़ी तमाम । चारो तरफ़ घूमते करैं रखवरिया ॥ कजरिया० ॥ पहुचा दल जिस दम एक बार, फौंजे टूट पड़ीं ललकार । डंडा मारन लागे फूटन लगी खोपड़िया ॥ कजरिया० ॥ कोई के हांथ पैर गये टूट । कोई के तन से प्रान गये छूट । केतनन बांधल गइलै कस कसके रसरिया ॥

कजरिया० ॥ जालिम करैं जुर्म एकदम से, ॥ सुन के रहल न जाला हमसे । हमहूँ जइबै गोइयां बांध के कमरिया ॥ कजरिया० ॥ जितने भारत के संतान । करते जांय निछावर प्रान । कहते गोपाल मटरू सुनके सही खबरिया ॥ कजरिया० ॥

कजरी ॥ ९ ॥

बहिनों उठो उठो भारत को हम आजाद करावेंगी ॥ डरपोकों के हांथ में हम चूड़ी पहिनावेंगी । आजादी के लिये जुर्म सब सहते जावेगी ॥ भर देंगी जेहल सीने पर गोली खावेंगी । गोपाल अब जालिमों को कुछ करके दिखलावेंगी ॥

कजरी ॥ १० ॥

करते चलो जुर्म तुम हमपर हम तुमको समझावेंगे ॥ बढ़ा दिया जो कदम तो पीछे नहीं हटावेंगे । गन मशीन गोली डंडा से नहि घबड़ावेंगे ॥ मरकर भी दुनियां को हम जीना सिखलावेंगे ।

गोपाल कहते चरखा चक्र चलाते जावेंगे ॥

कजरी ॥ ११ ॥

बढ़ो बीर भारत के फिर एक बार बारे बलमू । असह योग का लेलेकर हथियार बारे बलमू ॥ तनमन धन से किया खुशामद बार बार अपनाया हम । लाख मुसीबत सर पर झेली समर में सर कटवाया हम ॥ जहां पसीना इनका गिरता पहिले खून बहाया हम । डायर के हांथो से अपने बच्चों को मरवाया हम ॥ गमजरा न हमने कीन्हा । हर तरह इन्हें सुख दीन्हा । ना किया कभी कोई बातों से इनकार बारे बलमू ॥ हम इनका विश्वास करैं ये हमसे करते चाल सुनो । हमें दिलासा दे दे करके करते सदां हलाल सुनो ॥ सब कुछ ढो ढो ले जाते भारत को कर कंगाल सुनो । तड़पाकर दाना बिन हमको होते सदां निहाल सुनो ॥ हर तरह हमें कलपाते, अपने

नित मौज उड़ाते । येकुली कहें हम कहें इन्हें सरकार बारे बलमू ॥ हम दो भाई मेल करैं ये फूट सदां डलवाते हैं । लड़वा करके हम दोनों को अपना काम बनाते हैं ॥ जिन बातों से चिड़ है मुझको वही सदा करवाते हैं । कहते हैं अन्याय न्याय का झूठा ढोंग दिखाते हैं ॥ सच कहने पर जुरवाना, तिस पर से जेहल खाना । मशीनगन गोली का सहते मार बारे बलमू ॥ किया बहुत मिन्नत हमने पर रहम जरा नहीं आया है । देश दशा भारत का गांधी सबको तुरत जगाया है ॥ स्वराज लेना चहिये इससे हक अपना समझाया है । सत्याग्रह संग्राम के खातिर आगे कदम बढ़ाया है ॥ हमपर यह जुर्म मचावें । हम सब कुछ सहते जावें है असहयोग का सदा यही व्योहार बारे बलमू ॥ एक होय कुल भारत बासी हो जाओ चटपट तइयार । ऊंचा करदो झंडा फिरसे भारत का मेरे

सरदार ॥ तोप तमञ्चा मसीनगन को देख न जाना हिम्मत हार । पैर न पीछे धरना चाहे तनके टूकड़े होय हजार ॥ तन मन धन से लग जाओ । कुछ करके इन्हें दिखाओ । नाहीं तो दुश्मन मरिहैं खूब पछार बारे बलमू ॥ जहां तलक हो सकै स्वदेशी का घर घर प्रचार करो । चलाओ चरखा मिलजुल के औ खद्दरका व्योहार करो ॥ सत्याग्रह संग्राम करो ना कोई से तकरार करो । गुलामी का अब काट के बन्धन भारत का उद्धार करो ॥ बीरों भारत के नाते, यह रामदास सिखलाते । गोपाल कहते बढ़े चलो ललकार बारे बलमू ॥

कजरी ॥ १२ ॥

कब तक रहोगे जिन्दा जगमें जो इतना इतराते हौ । गरीब के उपर नाहक ताकत अजमाते हौ । इसी तरह तुम कलपोगे जैसे कलपाते हो ॥ चलो भलाई पर क्यों इतना पाप कमाते हौ।

गोपाल कहते नाहक प्यारे जुर्म मचाते हौ ॥

कजरी ॥ १३ ॥

हमरी लगी लगन चरखा से चरखा रोज चलइबै ना। सूत कात बढ़ियां सारी घरहीं बिन वइबै ना ॥ बस्त्र बिदेशी छूअब ना देशी अपनइबै ना। धोती चादरपर फुलवर नई चाल छपइबैना। गोपाल गांधी जी का जै जै कार मनइबै ना ॥

कजरी ॥ १४ ॥

चरखा कतब गोइयां सइयां से मगँवाय के। गांधी क गुन गायके ना ॥ टेक ॥ रूई घरही पर धुनवाके, कतबै सूत सखी मन लाके। साड़ी बिन वइबै जोलहा के घर भेजवायके ॥ गांधीक गुनगाय के ना ॥ १ ॥ धोती पर बेइल छपवइबै। चादर पर बूटी कढ़वइबै ॥ फेंकबै माल बिदेशी अगिया में जरवाय के। गांधी क गुन गायके ना ॥ २ ॥ सत्याग्रह में नाम लिखइबै। अपने भाइन के सम-

झइब ॥ जे ना मानी भेजबै घर चूड़ी पहिनायके । गांधीक गुन गायके ना ॥३॥ जेहल से ना तनिक डेरइबै । आगे बढ़के गोली खइबैं ॥ हँस हँस प्राँण गवंइबै भारत के हित जाय के ॥ गांधी० ॥ भारत के आजाद बनइबै । अबना गुलाम हम कहवैबे कहते गोपाल मटरू वार बार समझायके गांधी क गुन गायके ना ॥ ५ ॥ कजरी ॥ १५ ॥

हमतो स्वराज लेवे सइयां चाहे मर मिट जइवै ना । सत्याग्रह सरकार से करके जेहल जइवै ना ॥ तू बइठा घर में हम जाके गोली खइबै ना । हिजड़न के मुहँ मे करिखा हम खूब लगइबै ना, गोपाल नारिन से भारत स्वाधीन करइबै ना ॥

कजरी ॥ १६ ॥

हां हां प्यारी चरखा चलाओ ॥ गांधी क बति या न अब विसाराओ । हां हां प्यारी चरखा चला ओ ॥ भारत क हमरे हौ खादी सहारा । खादी

बिना नहीं होइहैं गुजारा। अपने स्वदेशी के सब अपनाओ मलिया बिदेशी में अगिया लगाओ ॥ हां हां प्यारी चरखा चलाओ ॥ चोलिया दुपट्टा स्वदेशी हो सारी, मरने पै देशी कफन होवै प्यारी। सपने में छूओ न मलिया विदेशी रुपया बहत्तर करोड़ बचाओ ॥ हां हां० ॥ तजके सकल काम चरखा चला दो, घर घरमें सूतों की ढेरी लगादो। जस कलपत थ दोना बिना हम वस जरा प्यारा इनको छकाओ ॥ हां हां० ॥ चरखे का जब से चलाना है छूटा, भारत क भाग उस दिन से फूटा। जालिम ने आके मचाई यहां धूम अब से भला पार इनको लगाओ ॥ हां हां० ॥ चरखे को निस दिन चलाया करूंगी। दुश्मन के दिलको जलाया करूंगा। कहत गोपाल इसके भरोसे आजाद भारत को फिर से बनाओ ॥ हां हां० ॥

कजरी ॥ १७ ॥

जालिम बहुत दिनासे भारत क कइल बरबादीना ॥

अब टरबै ना बिना लिये इनसे आजादी ना ॥
चरखा रोज चलाओ मिल जुल पहिनो खादीना ।
महात्मा गांधी सोते से तुम्हें जगादी ना ॥
गोपाल मटरु रच रच के सबको समझादी ना ॥
कजरी ॥ १८ ॥

भारत के खूब जगउलैं राम महात्मा गांधी आके । पहिले जा जा हर सहरन में लेकचर खूब सुनउलैं राम, महात्मा गांधी आके ॥ चरखे का महिमा बतलाके खद्दर के पहिरउलैं राम, महात्मा गांधी आके ॥ बिन स्वराज के सुख ना मिलि हैं यही बात समझउलैं राम, महात्मा गांधी आके ॥ छोड़वा के कुल चीज विदेशी देशी के अपनउलैं राम, महात्मा गांधी आके ॥ दीन दुखी भारत के कारन बहुतैकष्ट उठउलैं राम, महात्मा गांधी आके॥ गोपाल मटरु कहैं न भूले जो जो बात बतउलैं राम । महात्मा गांधी आके ॥

कजरी ॥ १६ ॥

बालम सब कोई कातै चरखा चरखा हमें लियाये ना । हमहूँ कतबै सूत जाय खदर बिनवाये ना ॥ माल बिदेशी अब हमरे घरमें मत लाये ना ॥ कांग्रेस में तू भी जाके नाम लिखाये ना । गोपाल क बांकी कजरी सावन में गाये ना ॥

कजरी ॥ २१ ॥

चरखा कातो मानो गांधी जी की बतिया, बिपतिया कटी जइहैं ननदी ॥ रूई चरखा तूं मंग वाओ अब ना तनिको देर लगाओ । पाये जब फुरसत तब काते दिनवां रतिया ॥ बिपतिया० ॥ करे तूँ सूत जौन तइयार, ले जाये स्वदेशीभंडार । बेच के पइसा लेके खाये दुनों बखतिया ॥ बिपतिया० ॥ चरखा को चरखा मत जानों । एके चक्र सुदर्शन मानो । करिहैं स्वतंत्र भारत इसमें यही सिफतिया ॥ बिपतिया० ॥ गांधी जी ने यही

बिचारा । चरखा दुखियन का रखवारा । एकरे बिन ना बचिहैं भारत क इजतिया ॥ बिपतिया० ॥ कहते गोपाल चरखा चलिहैं । दुश्मन देख २ के जलि हैं । गावै मटरु मिलजा भारत क कुल जतिया ॥ बिपतिया कटि जइहैं ननदी ॥

कजरी ॥ २० ॥

हमके लियाद बालम सुरती दिल मोहनी हौ आला ना । नकली सुरती जिन लाये कम कीमत वाला ना ॥ दिल मोहनी दिल मोह लेत हौ बनल निराला ना । निस दिन हम खाइला सइयां बहुत सोहाला ना ॥ सीताराम क असल मसाला बनल देखाला ना ॥

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता·

मेवालाल एण्ड को०

कचौड़ीगली बनारस सिटी ।

"श्रीबागेश्वरी प्रेस" दारानगर, बनारस सिटी में मुद्रित ।

छपगई ! बिल्कुल फ्रेश अपूर्व पुस्तकें !! छपगई !!!

इसलिये आइये—

सुनहला मौका न बिसारिये ! खरीदिये और अवश्य खरीदिये !!

सावनसती उर्फ पटनेकाशोर	)॥	स्त्रीशिक्षकउर्फस्त्रीधर्मोपदेश	॥-)
सावन सौगात उर्फ जातीय		नारी शिक्षा दर्पण	।)
चौधरी सर्दारकी कजलियां	)॥	स्त्री गीत बहार उर्फ स्त्री गीत	
सावनस्वदेश उर्फगौपुकार	-)॥	प्रकाश	-)॥
सावन सरदार	)॥	नारी धर्म उपन्यास	।)
सावन सन्देश उर्फ बेचूबीर		तिलस्मी तहखाना उर्फ	
व गाजीमियां की कजली	)॥	कुमारीमधुवसरी १ला खंड	॥)
सावन का सहायक उर्फ मेला		भारत दुर्दशा नाटक	॥)
घुमनी बेटीबेचवाकी कजली	)॥	पृथ्वीराज नाटक	॥)
सावन का सखा	)॥	कुअरकान्ता चारो भाग	॥)
सावन का सेनापति	)॥।	हकीकत राय	≡)
बड़ा कजरी सितारे हिंद	≡)	रामलीला नाटक	॥)
सावन शहीद उर्फ		विदेशिया नाटक	≡)
श्रद्धानन्द का हाल	)॥	कवित्त बज्रंग विजय	।)
सावन की शुद्धि	)॥	सवैया शतक	≡)
सोवका का संगी	)॥	कवित्त कुञ्जन बहार	=)
सावन का राजा	)॥	श्रीमती मंजरी नाटक	॥।)
नई कजरी दुनमुनियां	)॥	सती अनुसुइया	॥)
सावन स्वराज	)॥।	अमृतोपदेश	-)॥
सावन का सत्याग्रह	)॥।	सावन स्वदेश भारत	)॥।
भारत पिकेटिंग	)॥।	राष्ट्रीय गायन	॥।)

विशेष हाल जाननेके लिये हमारा बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगादेखें

पता—मेवालाल एण्ड को०, पुस्तकालय,

कचौड़ी गली, बनारस सिटी ।